मंथन समूह सफलता की कहानी...

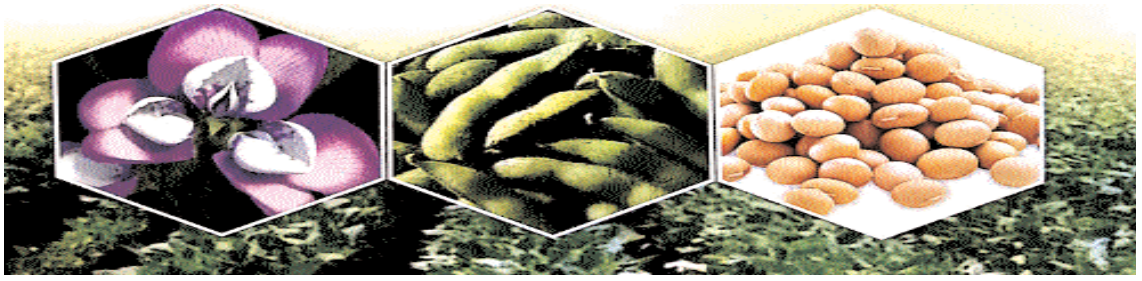

---प्रेरणादायक किसानों की सफल गाथाएं---

तकनीकी मार्गदर्शन प्राप्त कर किसान गोटूलाल लक्ष्मण ने कपास की फसल से कम लागत में अधिक मुनाफा लिया

मध्य प्रदेश के बड़वानी जिले के अन्तर्गत ब्लॉक निवाली ग्राम भांगीडाड के रहने वाले प्रगतिशील किसान श्री भैया सिंह गीनी मुख्य रूप से कपास की खेती करते हैं। किसान भैया सिंह जी अपने बाप-दादाओं की पुरानी पद्धति से खेती करते आ रहे थे। उनकी दिक्कत यह थी कि कीट तथा रोगों की जानकारी का न होने से पूर्ण रूप से समय, श्रम, पानी खाद का प्रयोग करने के बावजूद अच्छी फसल का उत्पादन नहीं ले पा रहे थे। तभी उनके किसान मित्र ने सलाह दी आप मंथन समाज सेवा समिति से सम्पर्क करें। बड़वानी जिले में बायोटेक किसान हब प्रोजेक्ट सरकार के सहयोग से चलाया जा रहा है। जिसमें कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक सहयोग प्रदान करते हैं। मित्र की सलाह से प्रेरित होकर उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारी व मंथन समाज सेवा समिति के क्षेत्राधिकारी भुलीराम जी से मुलाकात की। उनसे सहायता का अनुरोध किया। समिति द्वारा उन्हें कपास के उच्च गुणवत्ता वाले बीज, खेत तैयार करने, मशीनीकृत बुवाई करने व सही मात्रा में खाद, दवाईयां तथा बीजोपचार कर बुवाई करने जिसमें खरपतवार नाशक दवाईयों का उपयोग करवाया गया। बायोटेक हब प्रोजेक्ट के तहत समय-समय पर वैज्ञानिक सलाह दी गई। जिसका सही विधि द्वारा उपयोग करवाया गया।

भैया सिंह जी ने फसल का प्रबंधन बहुत अच्छा किया। इस बार कपास की बुवाई से कटाई तक तकनीकी रूप से कपास की खेती की। भैया सिंह जी की मेहनत रंग लाई। नई तकनीक का उपयोग करके किसान ने लागत से अधिक उत्पादन प्राप्त किया। कपास का भरपूर उत्पादन लिया। संस्था द्वारा बड़वानी जिले के अन्य किसानों को भी खेत में लगातार सुधार व कम लागत में अधिक मुनाफा की खेती करवाई गई। किसान द्वारा ग्राम के अन्य किसानों को भी तकनीकी रूप से कपास की खेती करने के लिए प्रोत्साहित करवाया।

कृषक भैया सिंह जी ने मंथन ग्रामीण एवं समाज सेवा समिति का आभार व्यक्त किया। कृषक भैया सिंह गीनी जी ने बताया कि इस सफलता का मुख्य कारण मंथन के अधिकारियों द्वारा समय-समय पर खेत में आकर फसल के संबंध में पूर्ण जानकारी देना एवं वैज्ञानिकों द्वारा समय-समय पर फसल से संबंधित जानकारी उपलब्ध कराना है। मुझे अपनी इस सफलता पर खुशी है तथा इसका श्रेय मैं मंथन ग्रामीण समाज सेवा समिति तथा डी.बी.टी. द्वारा कृषकों के हित में लिए गए निर्णयों को बहुत धन्यवाद देना चाहता हूँ। भैया सिंह गीनी जी ने बायोटेक किसान हब प्रोजेक्ट के अधिकारी तथा अन्य सभी का धन्यवाद किया। किसान ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि यदि इसी प्रकार से बायोटेक हब के माध्यम से कृषकों के साथ मिलकर ऐसे प्रोग्राम साझा किए जाते रहे तो सभी किसान भाई नई ऊंचाईयों को निश्चित रूप से छूने में सफल होंगे।

रोजगार

मंथन पॉलीटेक्निक कॉलेज
इंदौर-भोपाल हाईवे पुलिस चौकी के पास अमलाहा सीहोर, (म.प्र.)
(एआईसीटीई, भारत सरकार द्वारा अनुमोदित)

पॉलिटेक्निक (डिप्लोमा इंजीनियरिंग)
इलेक्ट्रिकल (इंजी.) (E.E.)
सिविल (इंजी.) (C.E.)
मैकेनिकल (इंजी.) (M.E.)
कंप्यूटर साइंस (इंजी.) (C.S.E.)
इलेक्ट्रॉनिक एवं टेली कम्यूनिकेशन (इंजी.) (E.C.E.)

- : विशेषताएं :-
- शत् प्रतिशत रोजगार के सुनहरे अवसर।
- सुव्यवस्थित वर्कशॉप तथा आधुनिक मशीनों पर कार्य करने का अवसर।
- उत्तम गुणवत्ता का प्रशिक्षण।
- छात्रों को भविष्य निर्धारित करने का मौका।
- न्यूनतम शुल्क पर छात्रावास की सुविधा।

न्यूनतम योग्यता: 10वीं/12वीं कक्षा उत्तीर्ण

छात्रवृत्ति
- अल्पसंख्यक/अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों हेतु भारत सरकार एवं राज्य सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं की सुविधा।
- अल्पसंख्यक वर्ग की छात्रवृत्ति के लिए 10वी/12वीं में 50 प्रतिशत अंक आवश्यक।

प्रदेश की एकमात्र संस्था जो प्रशिक्षण के उपरांत 100% रोजगार प्रदान करती है

अपना उज्जवल भविष्य निर्धारण करने के लिए सम्पर्क करें: मंथन पॉलिटेक्निक कॉलेज-मो.623200930

अमरूद की बागवानी से सफलता का राज, किसान शिवराम श्रवण के लिए है बना मुनाफे का सौदा

शिवराम श्रवण मध्यप्रदेश के खरगोन जिले के अंतर्गत ग्राम पंचायत दस्नावल ब्लॉक सेगांव के रहने वाले हैं, 50 वर्षीय शिवराम श्रवण ने अपने खेत में अमरूद की बागवानी शुरू की। श्री शिवराम श्रवण को खेती करते हुए लगभग 10 से 12 वर्ष हो गए हैं। लेकिन इस बार किसान शिवराम श्रवण ने लीक से हट कर खेती करने के बारे में सोचा। अनाज उगाने की जगह उन्होंने फलों की खेती से मुनाफ कमाने की सोची उनका कहना है कि उन्हें अमरूद की बागवानी की प्रेरणा खरगोन जिले के मंथन समाज सेवा के क्षेत्र अधिकारी श्री संदीप जी के माध्यम से प्राप्त हुई। मंथन ग्रामीण एवं समाज सेवा समिति भोपाल के सहयोग से डीबीटी बायोटेक किसान हब परियोजना से जुड़ने के बाद किसान आधुनिक पद्धति के तरीके से अमरूद की बागवानी के बारे में जानकारी प्राप्त कर सभी प्रकार की जानकारियों से अवगत हो कर तथा परियोजना के साथ जुड़कर इस क्षेत्र में कदम रखा। अमरूद खेती के बारे में जागरूक होकर नये नये तरीकों से परिचित होकर उच्च पैदावार वाले अमरूद की कलमों की जानकारी के साथ उसकी समय पर देख रेख व समय-समय पर कृषि वैज्ञानिकों द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त कर बीमारियों का सही समय पर प्रबंधन कर किसान शिवराम श्रवण अपने फार्म हाउस में अमरूद के 100 से ज्यादा पेड़ लगवाए और अमरूद की बागवानी की उत्पादकता को बढ़ाया।

किसान शिवराम श्रवण अपनी मेहनत और सही तकनीकों के जरिए खेती में बदलाव लाने की दिशा में एक बड़ा कदम बढ़ा रहे हैं। खरगोन जिले में जहां पारंपरिक खेती में कई चुनौतियां सामने आती हैं, वहीं बागवानी और खासकर अमरूद की बागवानी के जरिए किसानों को तगड़ा मुनाफा हो सकता है। किसान शिवराम श्रवण की कहानी इस बात का जीता जागता उदाहरण है कि अगर खेती को सही तरीके से किया जाए, तो यह घाटे का नहीं, बल्कि एक बड़े फायदे का सौदा बन सकती है। किसान शिवराम श्रवण का फार्म हाउस अब एक सफल अमरूद बागवानी का उदाहरण बन चुका है। उन्होंने अपने फार्म हाउस में अमरूद के 100 पेड़ लगवाए। यह पेड़ लगभग सात से आठ महीने में तैयार होकर फल देने लगते हैं और इसके बाद हर पेड से भारी मात्रा में आमदनी हो सकती है। अगर इसके खर्च की बात की जाए, तो एक पेड़ को लगाने, उसकी देखभाल और अन्य गतिविधियों में लगभग 1000 रुपये का खर्च आता है। लेकिन इस खर्च के मुकाबले जो मुनाफा मिलता है, वह कहीं ज्यादा होता है।

अमरूद के एक पेड़ से एक सीजन में करीब 10,000 रुपये की आमदनी हो जाती है। अब अगर 100 पेड़ों की बात करें तो एक सीजन में लाखों रुपये का मुनाफा प्राप्त किया जा सकता है। बागवानी के इस तरीके से न केवल स्थानीय किसानों के लिए आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है, बल्कि यह क्षेत्र के विकास में भी अहम योगदान दे सकता है।

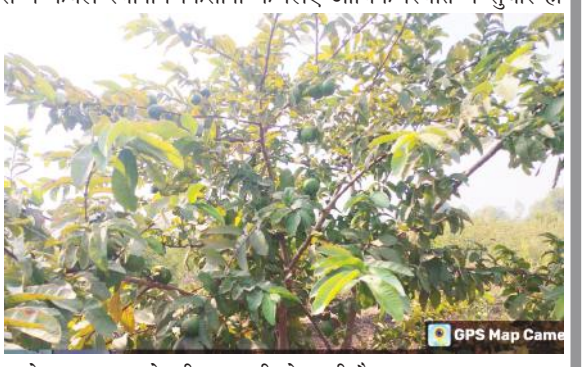

किसान शिवराम श्रवण के फार्म हाउस पर काम कर रहे व्यक्ति ने लोकल 18 से बातचीत करते हुए बताया कि यह बागवानी शिवराम श्रवण के द्वारा की जा रही है। उन्हें मंथन समाज सेवा समिति के माध्यम से बागवानी के बारे में जानकारी मिली और इसके बाद उन्होंने 100 से ज्यादा पेड़ मंगवाए और फार्म हाउस में लगवाए। पेड़ लगभग 7 से 8 महीने में तैयार होते हैं और एक सीजन में एक पेड़ से 10,000 रुपये की आमदनी हो जाती है।

खरगोन जिले के किसान जो पारंपरिक खेती से परेशान हो चुके हैं, उनके लिए अमरूद की बागवानी एक वरदान साबित हो सकती है। सही देखभाल और तकनीकी जानकारी के साथ इस बागवानी से न केवल बेहतर आय हो सकती है, बल्कि यह पूरे क्षेत्र में खेती के नए आयाम स्थापित कर सकता है। शिवराम श्रवण जैसे किसान यह साबित कर रहे हैं कि अगर सही दिशा में काम किया जाए, तो खेती सिर्फ एक रोजगार का साधन नहीं, बल्कि एक बड़ा मुनाफा भी हो सकती है।